नमाज़ की अहमियत

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि उन्होंने अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना आप फरमाते थे कि अगर किसी के दरवाज़े पर नहर बह रही हो और वह रोज़ाना इस नहर में स्नान करे तो बताओ क्या उसके बदन पर कुछ भी मैल बाकी रह सकता है? सहाबा किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कहाः नहीं हर्गिज़ नहीं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया यही हाल पांचों वक़्त के नमाज़ों का है कि अल्लाह तआला इन नमाज़ों के ज़रिये गुनाहों को मिटा देता है। (सहीह बुखारी)

हर नमाज़ के लिए वजू बनाना ज़रूरी है और इस हदीस से नमाज़ की अहमियत का पता चलता है। हर नमाज़ी नमाज़ के वक़्त वजू बनाता है तो इससे उसको पुण्य तो मिलता ही है इसके साथ-साथ वजू से उसके हाथ पावं चेहरे के मैल और धूल गर्द साफ भी हो जाते हैं और अनुभव बताता है कि वजू बनाने के बाद नमाज़ी को एक तरह से चुस्ती और फुर्ती का भी एहसास होता है, शरीर में ताजगी पैदा हो जाती है।

नमाज़ को उसके निर्धारित समय पर पढ़ने की भी बड़ी फज़ीलत आई है। अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि अल्लाह के नजदीक कौन से कर्म प्रिय हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अपने निर्धारित समय पर नमाज़ पढ़ना, फिर पूछा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करना। (सहीह बुखारी, हदीस का आंशिक भाग)

नमाज़ की अदायगी के बारे में जो गफलत पाई जाती है वह अत्यंत अफसोस और दुखद है। आज की भाग दौड़ की जिन्दगी में मुसलमान नमाज़ जैसी कीमती इबादत के पुण्य से वंचित है, मस्जिदें खाली नज़र आ रही हैं, जबकि जान बूझ कर नमाज़ छोड़ने पर कड़ी चेतावनी दी गई है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस की अस्र की नमाज़ छूट गयी मानो उसका घर और माल सब लुट गया।

एक दूसरी हदीस में है बुरैदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है उन्होंने एक बदली वाले दिन फरमाया कि अस्र की नमाज़ जल्दी पढ़ लो क्योंकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने अस्र की नमाज़ छोड़ दी उसका नेक अमल बर्बाद हो गया। (सहीह बुखारी)

इसी तरह से अन्य वक़्त की नमाज़ों की फज़ीलत बयान की गई है और छोड़ने वालों को सख्त सज़ा की चेतावनी दी गई है। कुरआन में सब्र और नमाज़ के ज़रिये मदद मगाने की तलकीन की गई है जिस तरह हम अपनी दुनिया संवारने और बनाने के लिये वक़्त निकाल लेते हैं उसी तरह अपनी आखिरत को सफल बनाने के लिए भी नमाज़ जैसी बहुमूल्य इबादत को अदा करने के लिए हर हाल में वक़्त निकालना चाहिए और इस फर्ज़ की अदायगी में किसी तरह की कोताही नहीं करनी चाहिए, स्वयं भी नमाज़ पढ़ें और अपने घर वालों को भी नमाज़ का पाबन्द बनायें। अल्लाह से दुआ है कि वह हम सभी लोगों को नमाज़ पढ़ने की क्षमता दे।

मासिक
इसलाहे समाज
अगस्त 2022 वर्ष 33 अंक 08
मुहर्रमुल हराम 1444 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. नमाज़ की अहमियत 2
2. बुद्धिमानी यही है 4
3. ईमान और अमल 5
4. ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० की शिक्षाएं 7
5. कुरआन मजीद की फज़ीलत... 10
6. कब्र 13
7. इस्लाम में उदारता और मानव अधिकार 15
8. मज़दूरों, गुलामों और क़ैदियों के अधिकार 17
9. प्रेस रिलीज (चांद) 19
10. इस्लाम, इन्साफ और समता 20
11. प्रेस रिलीज़ (रिपोर्ट) 22
12. वक़्त बहुमूल्य है 25
13. अपील 27
14. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

बुद्धिमानी यही है

नौशाद अहमद

गलती इन्सान ही से होती है और गलती की संभावना उसी से ज़्यादा रहती है जो सक्रिय रहता है। इसके अलावा हर गलती की अलग-अलग स्थिति होती है। कुछ गलती ऐसी होती है जो केवल व्यक्ति के लिये हानिकारक होती है और कुछ गलतियां ऐसी होती हैं जो पूरे समाज और मानवता के लिये घातक होती हैं, हमें दोनों से बचने की यथासंभव कोशिश करनी चाहिए।

किसी घटना पर उत्तेजित हो जाना और कानून को अपने हाथ में लेना अकल मन्दी और बुद्धिमानी नहीं है, हालात को रूटीन पर लाने की सबसे पहली जिम्मेदारी प्रशासन की होती है, इसी तरह से हर घटना पर अपनी राय रखना ज़रूरी नहीं है, क्योंकि हर घटना की अपनी अलग अलग स्थिति होती है इसलिये हर मामले पर कुछ लोगों का उत्तेजि हो जाना पूरे समुदाय के लिये बदनामी का सबब बन जाता है।

अब तक जो गलतियां हुई हैं उनको स्वीकार कर लेना बुद्धिमानी की बात है, अपनी गलती और असफलता पर अड़ जाना हमारे भविष्य को अंधकार बनाता है इसलिये भलाई इसी में है कि हम अपनी पिछली कोताहियों और कमियों का आकलन करके सुधार करने की कोशिश करें, और प्रयास यह रहे कि जो कोताहियां हो गईं हैं वह दुबारा न होने पायें।

कुरआन में सब्र और नमाज़ के माध्यम से मदद तलब करने की नसीहत की गई है लेकिन यह बड़े अफसोस की बात है कि आज यह दोनों चीज़ें हमारे जीवन से निकल चुकी हैं। नमाज़ से इतनी लापरवाही हो गई है कि लोगों को जुमा और ईद की नमाज़ों के अलावा महीनों-महीनों मस्जिद जाने तक की नौबत नहीं आती है, पूरा का पूरा घर दूसरे कामों के लिये वक़्त निकाल लेता है लेकिन नमाज़ जैसी बहुमूल्य इबादत के लिये न उसके पास वक़्त है और न ही इस्लाम के दूसरे अहकाम पर अमल करने के लिये फुर्सत है यह हमारे समाज के लिये किसी त्रासदी और टरेजडी से कम नही है। वास्तव में सब्र ताक़त है लेकिन कुछ लोगों ने इसको कायरता का नाम दे दिया है जबकि यह सब्र की गलत व्याख्या है हां सब्र में संतुलन और मध्यमार्ग का होना ज़रूरी है और हमें सब्र को उन्ही अर्थों में समझना हो गा जिस की शिक्षा इस्लाम ने दी है। कुछ लोगों की गलत व्याख्याओं और राय से बचने का सहीह तरीका यह है कि हम कुरआन, हदीस और विश्वसनीय इतिहास का गहराई से अध्ययन करें और अपने आस पास के लोगों को इसके लिये प्रेरित करें। इस मामले में जो कोताहियां हम से हुई हैं उनसे पाठ और सीख लेकर स्वयं को शरीअत और कानून का पाबन्द बनाने की ज़रूरत है। बुद्धिमानी यही है। अल्लाह तआला मुसलमानों को अपने जीवन के मकसद को समझने की क्षमता दे।

ईमान और अमल

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी, पटना

ईमान के साथ नेक अमल (सत्कर्म) भी ईमान का भाग है जो ईमान को ताक़त देता है और जिस से इन्सान की रूह स्वस्थ व ताज़ा और जीवित रहती है। जिस तरह खराब खाना खाने से इन्सान के शरीर को बीमारी लग जाती है उसी तरह बुराई और पाप करने से इन्सान की आत्मा बीमार पड़ जाती है वह नापाक हो जाती है इस लिये कि पाप गन्दगी है और जिस प्रकार इन्सान अपने शरीर के रोग के एलाज के लिये प्रयास करता और दुनिया के चक्कर लगाता और अपनी पूरी दौलत स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिये खर्च कर देता है इसी तरह अगर हमारी आत्मा बीमार पड़ जाए तो उसके उपचार की चिंता होनी चाहिए और उसके पवित्रता और विकास की चिंता होनी चाहिए।

याद रखें कि अल्लाह की जन्नत अल्लाह के अर्श के बाद सबसे पवित्र जगह है सब से खूबसूरत है उस का एक नाम ''हुस्ना'' है इसलिये इस पवित्र जगह पर किसी अपवित्र गन्दे इन्सान के जाने का सवाल ही नहीं पैदा होता। यही वजह है कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दों की पवित्रता और उसके दिल की पाकी का बड़ा अच्छा प्रबन्ध ा किया है ताकि वह इस शैक्षणिक ढांचे में ढल कर अपने भविष्य को उज्जवल बना ले और अल्लाह की जन्नत हासिल कर ले इसलिये इन्सान इस दुनिया में जन्नत का राही (यात्री, मुसाफिर) है।

अल्लाह अपने बन्दों से बड़ी मुहब्बत करता है, यह जितनी मुहब्बत करता है उतनी मुहब्बत मां बाप अपनी औलाद से भी नहीं करते। यह जितना प्यार मुहब्बत दया करूणा का मामला अपने बन्दों से करता है कोई मां अपने बच्चे से नहीं करती।

एक जंग में एक औरत का बच्चा गुम हो गया अब वह जिस छोटे बच्चे को देखती उसे सीने से लगा लेती और कलेजे से चिमटा लेती, उसे दूध पिलाने लगती थी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा (साथियों) से पूछा, अच्छा बताओ! क्या यह औरत पसन्द करेगी कि अपने दूध पीते बच्चे को आग में डाल दे? सहाबा ने कहा कि ऐसा हर्गिज़ नहीं करेगी, तो आप ने फरमायाः इस औरत को अपने बच्चे से जितनी मुहब्बत है और आग में जलने से नफरत है अल्लाह इस औरत से कहीं ज्यादा अपने बन्दों से मुहब्बत करता है। (सहीह बुखारी-५९९२)

स्पष्ट रहे कि अल्लाह ने जितनी इबादतें फर्ज़ की हैं यह सब बन्दों की पवित्रता के लिये हैं ताकि उसके बन्दे पाक साफ होकर जन्नत में चले जाएं।

नमाज़ के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर किसी शख्स के

घर के सामने नहर बह रही हो और वह रोज़ाना इस में पांच बार नहाये तो क्या उसके शरीर पर मैल बाकी रह सकता है? सहाबा ने कहा कि नहीं ऐ अल्लाह के रसूल! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः यही हाल पांचों वक़्त की नमाज़ों का है, अल्लाह इन नमाज़ों के ज़रिये गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी ५२८)

यह रोज़ा भी इन्सान के गुनाहों को पाक साफ करके उसके दिल में परहेज़गारी पैदा करता है, यह बुराइयों से दूर रखता है जैसा कि हमारे नबी फरमा रहे हैं रोज़ा गुनाहों से सुरक्षित रहने का ढाल है। (नेसई)

रमज़ान का अर्थ ही जलाना होता है इसे रमज़ान इस लिये कहा जाता है कि यह बन्दों के नेक कर्मों के सबब गुनाहों को जला देता है।

इसी तरह ज़कात और सदक़ा के दर्शन और हिक्मत को बयान करते हुए कुरआन कहता है ''आप उनके मालों में से सदक़ा कीजिए जिस के ज़रिये से आप उनको पाक साफ कर दें और उनके लिये दुआ कीजिए'' (सूरे तौबा-१०३)

पाप को मिटाने के लिये अल्लाह ने एक निराला इन्तेज़ाम यह फरमाया है कि उसने गुनेहगारों की मआफी के लिये तौबा का दरवाज़ा खोल दिया है जो रब का बड़ा करूणा और उपकार है इस तौबा के लिये हमें किसी इन्सान के पास जाने की ज़रूरत नहीं है। यह बन्दे और रब का मामला है, पस बन्दे से कोई चूक हो गई, नाफरमानी और अवज्ञा कर बैठा तो वह तुरन्त अपने रब के दरबार में अपने गुनाह को स्वीकार कर के भविष्य में पाप न करने का संकल्प कर ले। हां अगर उसने किसी का अधिकार हनन किया है, किसी बन्दे पर जुल्म किया है तो उससे अपने मामले को रफा-दफा कर ले। अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है ''करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह को दूर कर दे और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें जारी हैं।'' (सूरे तहरीम-८)

दूसरी जगह कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः सिवाये उन लोगों के जो तौबा करे और ईमान लायें और नेक काम करें, ऐसे लोगों के गुनाहों को अल्लाह तआला नेकियों से बदल देता है अल्लाह तआला क्षमा करने और करूणा करने वाला है'' सूरे फुरकान-७०)

नेक कर्म के सांसारिक और परलोक में उसके सकारात्मक परिणाम और पवित्र प्रभाव को समझने के लिये कुरआन की इन आयतों को पढ़ें और इन के अर्थ को समझें।

''जो शख्स नेक अमल करे मर्द हो या औरत लेकिन ईमान वाला हो तो हम उसे निस्सन्देह अत्यंत बेहतर ज़िन्दगी देंगे और उनके नेक कर्मों का बदला भी उन्हें अवश्य अवश्य देंगे'' (सूरे अहज़ाब-७)

अल्लाह हम से राज़ी हो जाए खात्मा ईमान पर हो अपने नेक बन्दों में शामिल कर ले। ऐ आस्मान व जमीन के पैदा करने वाले! तू ही दुनिया व आखिरत में मेरा वली दोस्त कारसाज है तू मुझे इस्लाम की हालत में फौत कर और नेकों में मिला दे।'' (सूरे यूसुफ-१०१)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएं

नवास बिन समआन रजियल्लल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरे बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम ८०५)

मअ्क़िल बिन यसार रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत के समान है। (मुस्लिम २९४८)

अबू अय्यूब अनसारी रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी शख्स के लिये यह जाइज नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज्यादा के लिये मुलाकात छोड़े इस तरह कि जब दोनों का सामना हो जाये तो यह भी मुंह फेर ले और वह भी मुंह फेर ले और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम में पहल करे। (बुखारी ६०७७ मुस्लिम २५६०)

उमर बिन अबू सलमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से कहा ऐ लड़के खाना खाने से पहले बिस्मिल्लाह कहो और अपने दायें हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ। (बुखारी ५३७६ मुस्लिम २०२२)

अबू बकरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब दो मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुकाबले पर आ जायें तो दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि यह तो कातिल था और मकतूल ने क्या किया? फरमाया कि मकतूल भी अपने मुकाबिल को कत्ल करने का इरादा किये हुये था। (बुखारी ७०८३ मुस्लिम २८८८)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः उमरा और हज्जे मबरूर का बदला जन्नत है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जमाही शैतान की तरफ से आती है, इसलिये जब तुम में से किसी को जमाही आये तो अपनी ताकत भर उसे शैतान की तरफ लौटा दे। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान को जो भी, थकान, बीमारी रंज व गम, तकलीफ पहुचती है यहां तक कि कांटा चुभता है तो अल्लाह इसकी वजह से उसके गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तुम में से किसी के तौबा कर लेने पर बहुत खुश होता है जैसे तुम में से कोई अपनी गुमशुदा ऊंटनी के पा जाने पर खुश होता है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम उस वक्त तक जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि ईमान न ले आओ, और उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि एक दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बताऊं जिसके करने से तुम एक दूसरे से मुहब्बत करने लगो गे? अपने बीच में सलाम को फैलाओ। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पांचों नमाज़ें और एक जुमा से दूसरे जुमा तक और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक इनके दर्मियान में होने वाले गुनाहों के लिये कफ्फारा हैं शर्त यह है कि कबीरा गुनाहों से बचा जाये। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रमज़ान के बाद सबसे अफज़ल रोज़ा अल्लाह का महीना मुहर्रम का रोज़ा है और फर्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारे खिलाफ हथियार उठाया तो वह हम में से नहीं है और जिसने हम को धोखा दिया तो वह हम में से नहीं है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्म का सिलसिला टूट जाता है मगर तीन चीज़ों की वजह से नहीं टूटता हैः सद-क-ए जारिया, वह ज्ञान जिस से फाइदा उठाया जाये और नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करे। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने मुर्दों को लाइलाहा इल्लल्लाह की तलकीन करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने जान बूझ कर मेरे ऊपर झूठ गढ़ा तो उसका ठिकाना जहन्नम है। (मुस्लिम) अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने नेकी की तरफ बुलाया उसके लिये उसी तरह का बदला है जिसने इस नेकी को अपनाया उनके सवाब से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। और जिसने बुराई की तरफ बुलाया तो उसको उसी जैसा गुनाह मिलेगा जिसने इस बुराई पर अमल किया उनके गुनाहों में से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अललाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने घरों को कब्रस्तान न बनाओ, बेशक शैतान उस घर से भाग जाता है जिसमें सूरे बक़रा पढ़ी जाती है। (मुस्लिम) अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसकी बुराइयों से उसका पड़ोसी सुरिक्षत न हो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सजदे में बन्दा अपने रब से करीब होता है इस लिये ज्यादा से ज्यादा दुआ करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इल्म हासिल करने के लिये चला अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में जाने का रास्ता आसान कर देगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह क्यामत के दिन कहे गा मेरे जलाल से मुहब्बत करने वाले कहां हैं, उस दिन मैं उनको अपनी छाया में कर लूंगा, उस दिन मेरी छाया के सिवा कोई छाया नहीं होगी। (मुस्लिम) अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं है। (मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आप ने फरमायाः जिसने हमारे दीन में नई बात ईजाद की जो उस से न हो तो वह मरदूद है। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आप ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा महबूब आमाल वह हैं जिनको बराबर किया जाये अगर्चे कम हों। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः जिस शख्स ने अल्लाह की फरमाबरदारी के लिये नज़र मानी तो चाहिये कि वह उस की फरमाबरदारी करे और जिसने अल्लाह की नाफरमानी की नज़र मानी तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (बुखारी)

कुरआन मजीद की फ़ज़ीलत और बर्कत से मुत्अल्लिक हदीसें

मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ रह०

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''ऐ मुसलमानों तुम में बेहतरीन वह मुसलमान है जो कुरआन पाक सीखने वाला और सिखाने वाला है'' (बुख़ारी शरीफ)

इस हदीस में कुरआन मजीद देख कर पढ़ने वाले, ज़बानी पढ़ने वाले, तर्जुमा और तफ़सीर पढ़ने वाले सब दाखिल हैं। पढ़ने के साथ-साथ उसका तर्जुमा और तफ्सीर भी समझने की आवश्यकता है, ताकि कुरआन मजीद से दुनिया व आख़िरत को सुधारने की हिदायत हासिल हो। इस हदीस से उन इस्लामी पाठशालाओं और प्रारंभिक शिक्षा के मदर्सों की भी अहमियत साबित होती है जिनमें कुरआन मजीद की शिक्षा दी जाती है। इन पाठशालाओं के चलाने वाले भी इसी फ़ज़ीलत के पात्र हैं।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

''निस्संदेह अल्लाह तआला इस किताब (कुरआन) पर अमल करने और इसके अनुसार जिन्दगी गुज़ारेन से बहुत सी कौमों को बुलन्द मर्तबा और कामियाबी अता करेगा और बहुत सी क़ौमों को इस (कुरआन) पर अमल न करने की वजह से ज़लील और रूसवा करेगा। (मुस्लिम शरीफ)

इस हदीस से साबित होता है कि कुरआन पाक पर अमल करना दुनिया व आख़िरत में तरक्की की ज़मानत है और उनको छोड़ देना जिल्लत और गुमराही का सबब है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को इस हदीस पर गौर करने की तौफीक अता फरमाये। आमीन

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

''कुरआन मजीद में महारत (निपुणता) रखने वाला उन लिखने वालों के साथ हो गा जो शरीफ़ और नेक लोग हैं। और जो शख़्स कुरआन मजीद पढ़ते समय अटक-अटक कर पढ़ता है और कठिनाई और मशक़्क़त महसूस करने के बावजूद कुरआन की तिलावत में लगा रहता है, उसको दो-गुना सवाब मिलेगा। (बुख़ारी, मुसिलम)

अर्थात कुरआन पाक में अभ्यास और मश्क़ करने वाला उन फ़रिश्तों के साथ हो गा जो कुरआन पाक को ''लौहे महफूज़'' से नक़ल कर के पहले आसमान पर लाते हैं। और कुरआन पाक जो सरलता से न पढ़ सके लेकिन कोशिश करता रहे तो उसको दो-गुना सवाब मिलता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया

"हसद करना जाइज़ नहीं मगर दो शख़्सों पर एक वह जिसको अल्लाह ने कुरआन पाक का इल्म दिया और वह दिन-रात उसके साथ क़ियाम करता है (यानी नमाज़ में उसे क़िरात के तौर पर पढ़ता है) दूसरा वह शख़्स है जिसको अल्लाह ने धनवान बनाया और वह अपने धन को अल्लाह की राह में दिन-रात ख़र्च करता रहता है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत उबादा बिन सामित रजियल्लाहो से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"जिसने नमाज़ में सूरः फ़ातिहा को न पढ़ी उसकी नमाज़ नहीं होगी" (बुखारी, मुस्लिम)

सूरे फातिहा कुरआन मजीद का सत और निचोड़ है। इस सूरे के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं। यह वह सूरे है जिसको नमाज़ की रूह कहा गया है। इसीलिये इमाम और मुक़्तदी को सिर्री और जेहरी नमाज़ों में इस सूरे का पढ़ना अनिवार्य है बग़ैर इस सूरे के पढ़े नमाज़ ही न होगी।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

"अपने घरों को क़ब्रिस्तान न बनाओ। बिला शुब्हा उस घर से शैतान निकल भागता है जिसमें सूरे बक़रा पढ़ी जाती है। (मुस्लिम शरीफ)

हर घर में कुरआन पाक की तिलावत होनी चाहिये सूरे बकरा ऐसी मुबारक सूरे है कि जिस घर में पढ़ी जाये वहां शैतान का क्या काम।

हज़रत अबू उमामा रजियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते सुना :

"कुरआन पढ़ो! इसलिये कि वह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिये सिफ़ारिशी बनकर आयेगा। दो चमकती और जगमगाती सूरतों को अवश्य पढ़ा करो। यह सूरः बकरा और सूरे आले इमरान हैं। यह दोनों सूरतें क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिये बादल बन कर या छांव बन कर आयेंगी या पक्षियों की दो जमाअतों की तरह जो पर बांध कर उड़ते हों, इसी प्रकार उड़कर आयेंगी और अपने पढ़ने वालों की बख़्शिश के लिये अल्लाह पाक से झगड़ेंगी। सूरे बकरा को अवश्य पढ़ा करो। उसका ले लेना बर्कत है और छोड़ देना पछतावे का कारण। बुरे लोग इसकी ताक़त नहीं रख सकते। (मुस्लिम शरीफ)

हज़रत इब्ने मसऊद रजियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"जिस शख़्स ने किसी रात में सूर बकरा की अन्तिम दो आयतों को पढ़ लिया, वह (पूरी रात) उसकी सुरक्षा के लिये काफी हो गयीं (बुख़ारी, मुस्लिम)

अन्तिम दो आयतों से मुराद "आ-म-नर्रसूलु बिमा उनज़िला" से सूरे के अंत तक।

हज़रत उबई बिन कअ्ब रजियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू मुन्ज़िर से दो मर्तबा प्रश्न किया।

"अल्लाह की किताब में कौन सी सबसे उत्तम आयत तुम को याद है? (यह प्रश्न आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबी से दो बार किया) उन्होंने उत्तर में

''आयतुल कुरसी'' का नाम लिया, तो आपने उनके सीने पर अपना हाथ रख कर फरमाया ऐ अबू मुन्ज़िर तुमको कुरआन का इल्म मुबारक हो गोया आपने प्रसन्न होकर उनको शाबाशी दी'' (मुस्लिम शरीफ)

हज़रत अबू दर्दा रज़ि० से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

''क्या तुम में से कोई शख्स एक रात में तिहाई कुरआन मजीद नहीं पढ़ सकता? सहाबा ने कहा कि यह भला कैसे संभव है? आपने फ़रमायाः ''कुल हुवल्लाहु अहद'', तिहाई कुरआन के बराबर है'' (मुस्लिम शरीफ)

मतलब यह है कि जो शख्स इस सूरे को एक मर्तबा पढ़ेगा तो गोया उसने एक तिहाई कुरआन पढ़ा और उसको इस सूरे के एक बार पढ़ने के बदले में एक तिहाई कुरआन के पढ़ने का सवाब मिलेगा।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि एक सहाबी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं सूरे ''कुल हुवल्लाह'' को बहुत ही पसन्द करता हूं। आप सल्लल्लाहु सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

निसंदेह उसकी मुहब्बत तुम्हें जन्नत में दाख़िल करायेगी। (मुस्लिम)

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

क़ब्र

प्रोफेसर डा० मुहम्मद जियाउर्रहमान आज़मी

क़ब्र यानी वह गढ़ा जिसमें मुर्दे को दफ़न करते हैं। इसे मृतक भवन या समाधि भी कहा जाता है। अरब प्राचीनकाल में भी मुर्दे को क़ब्र में दफ़न करते थे। तौरात से भी इस बात की पुष्टि होती है कि मुर्दों को दफ़न किया जाता था। जैसे याक़ूब अलैहिस्सलाम जिनका देहान्त मिस्र में हुआ था, पहले उनकी ममी की गई, अर्थात उनके शव में सुगन्ध भरी गई, चालीस दिन के पश्चात यूसुफ़ अलैहिस्सलाम फ़िरऔन की आज्ञा से उनके शव को लेकर फ़िलस्तीन आए और मकफ़ेला नामक गुफ़ा में दफ़न किया। (उत्पत्ति, ५०: २, ७, १३)

इसी प्रकार यूसुफ अलैहिस्सलाम के शव को बनी-इसराईल मिस्र से अपने साथ लाए और फ़िलस्तीन में दफ़न किया। हां, अगर कोई बीमारी फैल जाती थी तो मुर्दों को जला देते थे। (आमोस ६:१२) अरब में भी मुर्दों को दफ़न किया जाता था।

कुरआन से भी यही सिद्ध होता है कि मुर्दे को दफ़न करना चाहिए।

''फिर उसे मृत्यु दी, फिर उसे क़ब्र में दफ़न कराया''। (सूरा-८०, अ-ब-स, आयत-२१) और फ़रमाया।

''अधिक धन की इच्छा ने तुम्हें बहलाए रखा, यहां तक कि तुम क़ब्रिस्तानों में पहुंच गए''। (सूरा १०२, अत-तकासुर, आयतें १-२)

क़ब्र वास्तव में आख़िरत (मृत्यु के बाद के जीवन) का पहला पड़ाव है। अगर कोई इस पड़ाव में सुरक्षित रह गया (अर्थात् क़ब्र की यातना से) तो उसके बाद की जो दशा है, वह आसान है। जैसा कि एक हदीस में आया है, जिसका तिरमिज़ी (२३०८) तथा इब्ने माजा (४२६७) ने उल्लेख किया है।

एक ओर जहां क़ब्रों को पक्की करने से मना किया गया है, वहीं दूसरी ओर क़ब्रों का अनादर करने से भी रोका गया है।

एक सहीह हदीस में आया है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा,

कोई व्यक्ति भड़कते हुए कोयले पर बैठ जाए यहां तक कि उसका वस्त्र जल जाए तो यह इससे उत्तम है कि किसी क़ब्र के ऊपर बैठे। (मुस्लिम-६७१)

एक दूसरी हदीस में आया है ''न तो क़ब्रों पर बैठो और न उनकी ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ो। (मुस्मिल ६७२)

इसी प्रकार क़ब्रों के बीच जूता पहनकर चलने से भी मना किया गया है। (अबू दाऊद, ३२३०, नसई २०३८, इब्ने माजा, १५६८)

ऐसा इस लिए कि हम जिस प्रकार एक जीवित व्यक्ति का सम्मान करते हैं, उसी प्रकार हमें चाहिए कि मृतक का भी सम्मान करें। इसलिए उसकी हडिडयों को तोड़ने से भी मना किया गया है

और क़ब्र को गहरा खोदने का हुक्म दिया गया है, ताकि कोई पशु किसी के शव को निकाल न सके। इस प्रकार इस्लाम ने एक ओर जहां जीवित व्यक्ति को सम्मान देने का आदेश दिया है, वहीं दूसरी ओर मृतक व्यक्ति का आदर करने का भी आदेश दिया है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश हैः

बल्कि इस्लाम की शिक्षाओं में से एक यह भी है कि जब तुम्हारे बीच में से किसी की मृत्यु हो जाए तो उसके लिए दुआ करो, उसकी बुराइयां बयान करने में मत लग जाओ। (अबू दाऊद, ४८६६)

क़ब्र दो प्रकार से खोदी जाती है, एक तरह की क़ब्र को लहद कहते हैं और दूसरी तरह की क़ब्र को शिक़ (बग़ली) कहते हैं।

लहद उस क़ब्र को कहते हैं जो सीधी होती है जैसा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र। इसमें शव को रखने के बाद पहले उसको तख़्तों या पत्थर की पटियों से बन्द कर देते हैं और फिर उसके ऊपर मिटटी डाल दी जाती है। (मुस्लिम, ६६६)

शिक़ (बग़ली) क़ब्र उन स्थानों पर खोदी जाती है जहां की मिटटी कठोर होती है ताकि ऊपर से क़ब्र गिर न पड़े। जैसे मक्का में मिटटी पथरीली है। वहां इसी प्रकार की क़ब्र खोदी जाती है। एक ही क़ब्र में एक से अधिक शवों को भी दफ़न किया जा सकता है। जैसा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञा से उहुद में शहीद होने वालों को दफ़न किया गया था।

उनमें से जो अधिक कुरआन पढ़ सकता था, पहले उसे रखा गया, उसके बाद उसको जो उससे कम पढ़ सकता था। (बुखारी, १३४७)

इस प्रकार नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जीवन मरण दोनों दशाओं में विद्वानों को उच्च श्रेणी में रखा।

क़ब्र का अज़ाबः क़ब्र आख़िरत की पहली मंज़िल है। जो क़ब्र के अज़ाब से बच गया वह आख़िरत के अज़ाब से भी बच जाएगा और जो क़ब्र के अज़ाब से न बच सका वह आख़िरत के अज़ाब से भी नहीं बच सकेगा।

क़ब्र के इसी अज़ाब की ओर संकेत करते हुए कुरआन कहता है।

“अन्ततः जो चाल व चल रहे थे, उसकी बुराइयों से अल्लाह ने उसे बचा लिया और फिरऔनियों को बुरी यातना ने आ घेरा, अर्थात आग ने जिसके सामने प्रातः काल तथा संध्या समय पेश किया जाता है। और जिस दिन क़ियामत आएगी कहा जाएगा फिरऔन के लोगों को कठोर अज़ाब में दाख़िल कर दो। (सूरा ४०, अल मोमिन, आयत ४६)

एक दूसरी आयत में है

“हम उन्हें दो बार अज़ाब देंगे, फिर वे बड़े अज़ाब की ओर फेर दिए जाएंगे”। (सूरा-६ अत तौबा, आयत १०१)

सूरा अल अनआम में तो साफ़ साफ़ बता दिया गया है।

“काश कि तुम उन ज़ालिमों को देखते जो मृत्यु की कठिनाइयों में होते हैं और फ़रिश्ते उनकी जान निकालने के लिए हाथ बढ़ा-बढ़ा कर कहते हैं, लाओ निकालो अपनी जान, आज तुम्हें अपमानजनक अज़ाब दिया जाएगा इसके बदले कि तुम अल्लाह के

बाक़ी पृष्ठ २४ पर

इस्लाम में उदारता और मानव अधिकार

मौलाना अज़ीज़ अहमद मदनी

इस्लाम की दृष्टि में इन्सान सम्माननीय है चाहे उसकी आस्था कुछ भी हो, समाज में उस का स्थान जो भी हो। आज़ादी मानव सम्मान का एक प्रतीक है। इस्लाम ने इसे इन्सान का जन्मसिद्ध और प्राकृतिक हक़ समझा है। ज़बरदस्ती को अवैध और हराम बताया है। इस्लाम ने धर्म के मामले में किसी पर जबरदस्ती करने को सख्ती से रोका है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''दीन के बारे में कोई ज़बरदस्ती नहीं'' (सूरे बक़रा-२५६)

जोर जबरदस्ती से किसी के धर्म को बदलने को इस्लाम ने अत्यंत घृणा से देखा है, इस्लाम ने अपने विरोधियों पर अत्याचार को कभी वैधा नहीं समझा और न ही उनका अधिकार हनन किया बल्कि तमाम अधिकारों का ख्याल रखा।

इस्लाम ने जिम्मियों और गैर मुस्लिमों को अपने धर्म और आस्था पर बाकी रहने और धार्मिक कर्म काण्डों को अदा करने के लिये पूर्ण आज़ादी दी इसी तरह से इस्लामी हुकूमत उनके पर्सनल लॉ में कोई हस्तक्षेप नहीं करती। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नजरान वासियों से जो सुलह किया उसकी धाराएं इतिहास का उज्जवल अध्याय हैं।

पहले खलीफ़ा अबू बक्र सिददीक रज़ियल्लहो तआला अन्हो ने गैर मुस्लिमों के धार्मिक मामलात के बारे में जो संधि लिखी उसके शब्द कुछ इस प्रकार हैंः ''उन की धर्म शालाओ, गिरजाघरों को न ढाया जाए, उनके किले को न तोड़ा जाए जिससे वह अपने दुश्मनों से बचाव करते हैं, नाकूस बजाने से मना न किया जाए और उनके सलीब से जिसे वह अपनी ईद और खुशी के मौक़े पर निकालते हैं। (किताबुल खिराज, लेखक, अबू यूसुफ)

इन जिम्मियों के बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के फैसले और मुस्लिम देशों में यहूदियों, ईसाइयों और अन्य समुदाय की धर्म शालाओं का वजूद इस की स्पष्ट दलील है।

शिब्ली नौमानी रह० लिखते हैं कि उमर फारूक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने गैर मुस्लिमों के अधिकारों की रक्षा के लिये जो संधि (मुआहिदा) किया उसके भागों में कुछ अंश यह हैं:

''यह अमान है जो अल्लाह के गुलाम अमीरूल मोमिनीन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने ईलिया वासियों को दी है। यह अमान जान व माल, गिरजा घर, सलीब, बीमार व स्वस्थ और उनके तमाम धर्म वालों के लिये है, न उनके गिरजा घरों में बसेरा किया जाएगा न उनको ढाया जाए गा, न उनके प्रांगण को नुक्सान पहुंचाया जाएगा, न उनके सलीबों और उनके माल में कमी की जाएगी, धर्म के मामले में उन पर कोई जबरदस्ती नहीं की जाएगी, न उनमें से किसी को नुक्सान पहुंचाया जाए गा। (अलफारूक २/१३७)

शान्तिपूर्ण समाज के गठन के लिये न्याय का होना बहुत ज़रूरी है। इसी लिये इस्लाम धर्म ने इस पर

बहुत जोर दिया है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया है:

अल्लाह तआला तुम्हें ताकीदी (कड़ा) आदेश देता है कि अमानत वालों को एमानतें उन्हें पहुंचाओ और जब लोगों का फैसला करो तो समता व न्याय से फैसला किया करो! यक़ीनन यह बेहतर चीज़ है जिस की नसीहत तुम्हें अल्लाह तआला कर रहा है बेशक अल्लाह तआला सुनता है, देखता है'' (सूरे निसा-५८)

आयत का आदेश साधारण है। जजों और शासकों के लिये आदेश है कि परिचित और अपरिचित, अपने व बेगाने सब के बीच न्याय से काम लें, किसी से दुश्मनी रिश्तेदारी पक्षपात पर न आमादा करे। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''किसी कौम की दुश्मनी तुम को इस बात पर आमादा न करे कि तुम मौके पर न्याय न करो बल्कि ठीक ठीक कानून के साथ फैसला करो यही निष्ठा की पहचान है''।

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः किसी ने किसी मुआहिद पर जुल्म किया या उसका अपमान किया या उस की ताक़त से ज़्याद उस पर भार डाला या उसकी सहमति के बगैर उस से कुछ लिया तो क्यामत के दिन मैं उसकी तरफ से पक्षकार बनूं गा। (अबू दाऊद ३०५२)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने किसी मुआहिद को क़त्ल कर दिया तो उसे जन्नत की खुश्बू नहीं मिलेगी जबकि उसकी खुश्बू या महक चालीस साल की दूरी से मिल जाती है। (तिर्मिज़ी-१४०३)

इस्लाम ने गैर मुस्लिमों को समता और न्याय के इस कानून के द्वारा वह सभी रिआयतें और गारन्टी दी है जितना की उन्हें दिया जा सकता है और उन्हें इस बात से बिलकुल निडर कर दिया कि मुसलमान उनके साथ अत्याचार करेंगे।

इस्लाम नागरिकों के बुनियादी अधिकारों में से एक अधिकार यह भी बताता है कि उनके साथ भलाई, मानवता, सदव्यवहार और उदारता का प्रदर्शन किया जाए।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का एक गुलाम बकरी जबह करने के बाद चमड़ा उतार रहा था। इब्ने उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपने गुलाम से कहा कि बकरी का गोश्त तैयार हो जाने के बाद सब से पहले मेरे पड़ोसी को गोश्त देना। कहा गया कि वह तो यहूदी है तो इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया कि मैंने अल्लाह के रसूल पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना है कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने पड़ोसी के बारे में इतनी वसिय्यत की है कि यह खदशा हो गया कि उसे वारिस बना देंगे। (सहीह मुस्लिम २६२३) समाजी व सामूहिक भरण पोषण एक ऐसी जिम्मेदारी है जिसे इस्लाम गैर मुस्लिमों के साथ निभाता है वह गैर मुस्लिम जो इस्लामी समाज में रहते हैं उन का मान सम्मान उतना ही होता है जो सद व्यवहार व सम्मान एक मुसलमान के साथ होता है इस्लाम की तारीख में इसके नमूने और मिसालें मौजूद हैं जिस की एक झलक चन्द उदाहरण से जाहिर होती है। अबू बक्र सिददीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ज़माने में खालिद बिन वलीद हीरा के वासियों को जो वचन लिखा उसमें उल्लेख है कि जिम्मियों में से कोई शख्स बुढ़ापे के

बाक़ी पृष्ठ १६ पर

मज़दूरों, गुलामों और क़ैदियों के अधिकार

नौशाद अहमद

इस्लाम ने मजदूर तबक़ा को जो समाज का एक अहम अंग है उसके अधिकार की सुरक्षा के लिये हर संभव कदम उठाया है, यही वजह है कि मजदूरों को शोषित करने के तमाम रास्ते बन्द कर दिये हैं, इस्लाम ने अपने अनुयाइयों को मजदूरों के बारे में किसी भी तरह की कोताही पर सजा की चेतावनी दी है। मजदूरों के अधिकार का इतना ख्याल रखा गया है कि सन्देष्टा मुहम्मद स० ने अपने सेवक को दिन में ७० बार माफ करने का हुक्म दिया है। एक आदमी संदेष्टा मुहम्मद स० के पास आया और मालूम किया कि ऐ अल्लाह के रसूल हम अपने सेवक की गलती को कितनी बार माफ करते रहें। आप स० चुप रहे, उस आदमी ने फिर वही बात कही, फिर भी आप चुप रहे जब उस आदमी ने तीसरी बार यह सवाल दोहराया तो संसार के लिये दया आगार मुहम्मद स० ने फरमायाः उसे (सेवक) को हर दिन ७० बार माफ कर दिया करो।

आज मज़दूरों के अधिकार को छीनना आम बात है, उनपर जुल्म को जुल्म नहीं समझा जाता है, काम लेकर पैसा न देना या पूरा काम लेकर कम पैसा देना आम बात है, सिरे से पैसे ही न देना भी आम बात हो गयी है, ऐसा करने वाले के बारे में अल्लाह ने सख्त सज़ा की चेतावनी दी है। एक हदीसे कुदसी में आया है कि अल्लाह तआला फरमाता है कि महा प्रलय के दिन मैं तीन तरह के लोगों का विरोधी रहूंगा एक वह शख्स जिसने किसी आज़ाद को बेच कर उसकी कीमत खायी। तीसरा वह शख्स जिसने किसी को मजदूरी पर रखा और पूरा काम लेने के बाद उसकी मजदूरी नहीं दी।

इसी तरह इस्लाम ने यह हुक्म दिया है कि मज़दूर को उसका मेहनताना जल्दी अदा करो मुहम्मद स० ने फरमाया कि मजदूर की मजदूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो।

उसकी ताक़त से ज़्यादा काम लेना आम बात है जब कि इस्लाम ने गुलामों से भी उसकी ताक़त से ज़्यादा काम न लेने की सख्त हिदायत की है। पैगम्बर मुहम्मद स० ने फरमायाः गुलामों को कपड़ा पहनाओ, उनको खाना खिलाओ और उनकी ताक़त से ज़्यादा काम न लो।

इसी तरह इस्लाम ने मजदूरों और गुलामों को बुरा भला कहने से रोका है और उनको बददुआ देने से भी रोका है। एक मौके पर पैगम्बर मुहम्मद स० ने फरमाया न अपने ऊपर बददुआ करो न अपनी संतान पर बददुआ करो, न अपने सेवकों पर बददुआ करो और न अपनी जायदाद पर बददुआ करो क्योंकि ऐसा न हो कि वह समय भी ऐसा हो जिस में कोई भी दुआ कुबूल कर ली जाती है।

पैगम्बर मुहम्मद स० ने फरमाया कि आदमी अपने ऊपर अपने बीवी बच्चों पर और अपने सेवक पर जो कुछ भी खर्च करता है वह सदका है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि

इन्सान की हैसियत से मानवीय अधिकार में मजदूर या सेवक और स्वामी सब बराबर हैं।

इस्लाम ने स्वामी को अपने सेवक को खाने में शरीक करने की हिदायत की है। अल्लाह के रसूल स० ने एक मौके पर फरमाया जब खादिम तुम्हारे पास खाना ले कर आये तो उसे भी खाने पर बिठाये, अगर साथ में बिठा न सके तो अपने खादिम को खाने के लिये एक दो लुकमा दे दे क्योंकि खादिम सेवक ने गर्मी बर्दाश्त करके खाना तैयार किया है और मेहनत की है।

सुमामा बिन उसाल बनू हनीफा कबीले के सरदार थे। वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल करने के लिये भेस बदल करके घर से निकले थे लेकिन रास्ते ही में गिरफ्तार हो गये। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे साथियों (सहाब-ए-किराम) ने इन्हें मस्जिदे नबवी के खम्बे से बांध दिया। जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ तो आप मस्जिदे नब्वी पहुंचे। सुमामा बिन उसाल को खम्बे से बंधा हुआ देख कर पूछा कि सुमामा तुम्हारे पास क्या है? उन्होंने जवाब दिया कि मेरे पास भलाई है। उन्होंने कहा ऐ मुहम्मद! अगर आप मुझे कत्ल करेंगे तो खूनी को कत्ल करेंगे। अगर आप उपकार करें भलाई का मामला करेंगे, तो आप यह उपकार एक शुक्रगुज़ार पर होगा। सुमामा बिन उसाल ने कहा अगर आप माल मांगे तो आप को जरूर दिया जायेगा। इस बात चीत के बाद मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुमामा बिन उसाल को उसी हालत में छोड़ दिया। जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दूसरी बार सुमामा बिन उसाल के पास पहुंचे तो सुमामा बिन उसाल ने पहले वाली बात को दोहराया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुमामा को इसी हाल में छोड़ दिया अर्थात खम्बे से बंधे रहे। जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुमामा बिन उसाल के पास तीसरी बार आये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वही बात दोहरायी और सुमामा बिन उसाल ने भी वही बात दोहरायी। फिर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम को हुक्म दिया कि सुमामा बिन उसाल को बंधन से आज़ाद कर दो। सुमामा को आज़ादी मिलने के बाद उन्होंने मस्जिदे नबवी के पास एक बागीचे में जा कर स्नान कर लिया और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुंच कर इस्लाम स्वीकार कर लिया।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे साथी अदी बिन हातिम रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक दल या संदेशवाहक आया और मैं उस समय अकरब नाम के स्थान पर ठहरा हुआ था दल के लोग मेरी फूफी और कुछ दूसरे लोगों को गिरफ्तार कर के ले गये जब कैदी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लाये गये तो उनको एक लाइन से खड़ा किया गया। मेरी फूफी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मेरी देख भाल करने वाला चला गया और औलाद बर्बाद हो गयी, मैं बूढ़ी औरत हूं, अब मेरा कोई सेवक नहीं है इस लिये मेरे साथ दया का मामला करें और मुझे आज़ाद कर दीजिये इसके बदले में अल्लाह आप पर एहसान करेगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः तुम्हारी देख रेख कौन करता है। औरत ने जवाब दिया मेरा भतीजा अदी बिन हातिम। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

औरत से पूछा वही अदी बिन हातिब जो अल्लाह और उसके रसूल से भागता है। औरत ने जवाब दिया हां। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस औरत को आज़ाद करने का हुक्म दिया। उसी मस्जिद में हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो भी मौजूद थे। उन्होंने मेरी फूफी से कहा कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवारी और सफर खर्च भी मांग लो जब मेरी फूफी ने सवारी और सफर खर्च मांगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका भी इन्तेजाम करने का हुक्म दिया।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत से कैदियों को बगैर फिदया के भी आज़ाद कर दिया था। एक कैदी अबू उज्जा ने एक मौके पर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि मैं एक गरीब आदमी हूं, मेरे पास अपने आप को आज़ाद कराने के लिये कुछ भी नहीं है, मक्का में मेरे बाल बच्चों में कोई कमाने वाला भी नहीं है। मेरे पास केवल लड़कियां हैं। अगर आप मुझे अपने यहां कैद में रखेंगे तो मेरे बाल बच्चे भूखे मर जायेंगे। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको आज़ाद कर दिया।

(प्रेस रिलीज़)

मुहर्रमुल हराम १४४४ का चाँद नज़र नहीं आया

दिल्ली, २९ जुलाई २०२२

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २९ जिलहिज्जा १४४३ हिजरी अर्थात २९ जुलाई २०२२ जुमा को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और जुलहिज्जा के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर नहीं मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाँक ३० जुलाई २०२२ शनिवार के दिन जुल हिज्जा की ३०वीं तारीख होगी।

बाक़ी पृष्ठ १९ का

सबब काम करने के योग्य न रह जाए या प्राकृतिक आपदा में किसी आपदा में लिप्त हो जाए या कोई धनी निर्धन हो जाए और उसके धर्म के लोग सदक़ा से उसका सहयोग करने लगें तो ऐसे तमाम लोगों से जिज़्या मआफ है और बैतुल माल (कोषागार) से उनको और उनके परिवार वालों की मदद की जाए। (इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था)

उमर फारूक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो एक दिन भ्रमण के लिये निकले, एक बूढ़े ज़िम्मी शख्स को देखा कि भीख मांग रहा है। आप ने इनका हाथ पकड़ा, अपने घर ले गये, घर में जो कुछ उपलब्ध ा था उसे दिया और कोषागार प्रभारी को यह निर्देश दियाः ''अल्लाह की क़सम यह न्याय नहीं कि हम जवानी में उनसे जिज्या वसूल करें और बुढ़ापे में उन्हें भीख मांगने के अपमान के लिये छोड़ दें। इसके बाद उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने ऐसे तमाम लोगों का जिज़्या मआफ करके कोषागार से वजीफा निर्धारित कर दिया'' (उमर बिन खत्ताब शख्सियत और कारनामे पृष्ठ ४१०)

इस्लाम, इन्साफ और समता

शैखुल हदीस मौलाना उबैदुल्लाह रहमानी रह०

अद्ल का अर्थ इन्साफ होता है, हर चीज़ में इन्साफ की ज़रूरत है, कथनी में, करनी में, अर्थात जो कहें या करें उसमें इन्साफ और सच्चाई हो हर चीज़ सच्चाई की तराज़ू में ठीक ठीक उतरे और इनसफ की कसौटी पर पूरी उतरे कमी और ज्यादती न हो।

इस्लाम में इन्साफ की बड़ी अहमियत है और इन्साफ करने पर बल दिया गया है यह इन्साफ दोस्त, दुश्मन अपने और पराये सबके साथ होना चाहिये किसी भी हाल में इन्साफ के मामले में रिआयत नहीं की जायेगी।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

(इसलिये) ऐ मुसलमानों खुदा लगती इन्साफ से गवाही दिया करो अगर्चे (वह गवाही) तुम्हारे लिये या तुम्हारे मां बाप के लिये या तुम्हारे करीबियों के लिये नुकसान पहुंचाने वाली हो (तो भी तुम सच्ची गवाही से न रूको) अगर कोई शख्स मालदार हो या फकीर, अल्लाह उसका मुतवल्ली है इसलिये तुम न्याय करने में अपने नफ्स की ख्वाहिश के पीछे न चलो और अगर जबान दबार कर (दो रूखी बातें) कहोगे (जिससे किसी हकदार का नुकसान हो) या (बिलकुल ही गवाही से) मुंह फेरोगे तो अल्लाह तुम्हारे कामों से आगाह है। (सूरे निसा आयत-१३५)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''मुसलमानों! (अब लेन देन के संबन्ध में भी अहकाम सुनो हर एक के मामले में) खुदा लगती गवाही इन्साफ से दिया करो और किसी कौम की दुश्मनी से अन्याय न करने लगो (बल्कि हर हाल में) न्याय ही किया करो (क्योंकि) न्याय परहेज़गारी के बहुत ही करीब है और अल्लाह से डरते रहे। निःसन्देह अल्लाह तुम्हारे कामों की ख़बर रखने वाला है''। (सूरे माइदा-८)

कुरआन की इस आयत में इन्साफ को तकवा से ज्यादा करीब बताया है और तकवा के दर्जे तक पहुंच कर इन्सान सही अर्थों में पूर्ण इन्सान बन जाता है। मुत्तकी (अल्लाह से डरने वाला) इन्सान न किसी पर अत्याचार करता है और न दुश्मनी पर आमादा होता है इसलिये इन्साफ की मांग यही है कि इन्साफ की राह में किसी की दुश्मनी आड़े न आ सके, इन्साफ दोस्ती और दुश्मनी से बुलन्द है बल्कि इन्साफ कहता है कि दुश्मन के साथ सबसे पहले इन्साफ किया जाये।

लोग इन्साफ के फैसले या गवाही में इसलिये गलत बयानी से काम लेते हैं कि जिस पक्ष की तरफदारी की जा रही है उसको फायदा पहुंच जाये जबकि कुरआन में है कि अल्लाह अपने अमीर और गरीब बन्दों के हक़ में तुम से (हम इन्सानों से) ज्यादा शुभचिंतक है तुम्हारी कमनजर तो आस पास तक जाकर रह जाती है और अल्लाह की नजर में सब कुछ है। अल्लाह सब कुछ देख कर और सब कुछ जान कर अपने बन्दों के साथ वह करता है जिसमें उसकी भलाई हो। गौर कीजिये कि इन शब्दों में इन्साफ का दर्शन (फलूसफा) कितनी गुणवत्ता (खूबी) से अदा किया गया है। कम हौसला इन्सान अपने फैसले व गवाही में किसी खास इन्सान की भलाई के

लिये झूठ बोलता या गलत फैसला देता है और समझता है कि इस झूठी गवाही और फैसले से भायदा पहुंचेगा जबकि परोक्ष का ज्ञान रखने वाला अल्लाह के सिवा यह किस को मालूम हो सकता है कि आगे चल कर उसके लिये क्या चीज़ लाभदायक ठेहरे गी। फिर एक दूसरे पहलू से देखिये कि मान लिया जाये कि एक खास आदमी को अपनी तरफदारी से फायदा पहुंचा भी दिया तो क्या यह सच नहीं इस (तरफदारी करने वाले इन्सान) ने हकीकत में सच्चाई का खून करके विश्व-व्यवस्था को बिगाड़ने की कोशिश की और अत्याचार की बुनियाद रखी जिससे विश्व शान्ति के अस्त व्यस्त हो जाने का खतरा है। गलत बोलने से इन्सान की सीमित निगाह में केवल एक आंशिक घटना के नफा नुकसान का ख्याल है और अल्लाह के इन्साफ के हुक्म में पूरे संसार की भलाई का एक रहस्य (राज) छिपा है जिस का हिस्सा केवल इन्सान ही है व्यक्ति और जमाअत बल्कि हुकूमत में इन्साफ की अहम ज़रूरत है।

स्वंय अपने बच्चों के बीच भी इन्साफ ज़रूरी है जो एक बच्चे को दिया जाये वही दूसरी बच्चे को भी दिया जाये। हज़रत नौमान बिन बशीर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मेरे पिता जी ने मेरी सेवा के लिये एक सेवक दिया और मुझे लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आये और कहा मैंने अपने इस बच्चे को एक सेवक दिया है आप गवाह बन जाइये। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुमने सब बच्चों को दिया है उन्होंने कहा नहीं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया "अल्लाह से डरो और अपने बच्चों के बीच इन्साफ करो"। (बुख़ारी)

यतीम बच्चों के साथ अभिभावकों (सरपस्तों) के लिये इन्साफ की ज़रूरत है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "और यतीमों के साथ इन्साफ करो"। (सूरे निसा) बच्चों, औरतों और यतीमों (अनाथों) के साथ इन्साफ करने से पूरे परिवार और घराने की इस्लाह हो सकती है इसी प्रकार दो व्यक्तियों या दो जमाअतों में इन्साफ करने से पूरे देश का सुधार हो सकता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

"और इन दोनों में बराबरी के साथ सुलेह करा दो और इन्साफ का ख्याल रखा यकीनन अल्लाह तआला इन्साफ करने वालों को पसन्द करता है"। (सूरे हुजूरात)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "और आप कह दीजिये कि मैं उस किताब पर ईमान रखता हूं जो अल्लाह ने उतारी है और अल्लाह की तरफ से मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे दमिर्यान इन्साफ करूं। अल्लाह हमारा और तुम्हारा रब है हम को हमारे कर्मों का बदला मिलेगा, हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नही है, हम सबको अल्लाह की तरफ जाना है"।

अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है अगर्चे हमारे तुम्हारे बीच मतभेद जरूर है मगर मैं तुम्हारे साथ इन्साफ करूंगा, अमीर, गरीब, मुस्लिम और गैर मुस्लिम की कोई रिआयत नहीं केवल इन्साफ की रिआयत है हम सब अल्लाह के बन्दे हैं और मरने के बाद अल्लाह के पास जाना है जहां इन्साफ और अन्याय का बदला मिलना है, हमको हमारे कर्मों का बदला मिलेगा और तुमको तुम्हारे कर्मों का बदला मिलेगा। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सही अर्थों में न्यायवादी थे इसलिये लोग नबी बनाये जाने से पहले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास अपने मामलात ले जाते और आपके फैसले पर सब सहमत और खुश हो जाते।

(प्रेस रिलीज़)

१६ वाँ आल इंडिया हिफ्ज व तजवीद व तफसीर कुरआन करीम प्रतियोगिता सफलता पूर्वक संपन्न

दिल्ली २० जून २०२२

पवित्र कुरआन मार्गदर्शक किताब और कौम व मिल्लत के लिये महान पूंजी है इसकी शिक्षाओं को आज के इस दौर में साधारण करने की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। हमने इसके ज़रिये इस देश की बेमिसाल खिदमत की है। आज इसके ज्ञानात्मक रहस्योदघाटन को स्पष्ट करने की सख्त ज़रूरत है, इसके ज़रिये अम्न व शान्ति, भाई चारा, और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलेगा। आपसी नफरत और आतंकवाद का अंत होगा। यह उदगार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने १६वें आल इंडिया हिफ्ज व तजवीद व तफसीर कुरआन करीम प्रतियोगिता के अंतिम सत्र में १६ जून २०२२ को व्यक्त किये।

अमीर महोदय ने अपने अध यक्षीय संबोधन में संबोधित करते हुए कहा कि जरूरत इस बात की है कि हम पवित्र कुरआन के वास्तविक वाहक बनें, जमाना हमारे मार्गदर्शन का प्रतीक्षक है। अगर हम कुरआन की मानवतावादी शिक्षाओं को सही मानों में अपना लें तो मानवता की काया पलट सकती है और वह इसकी बर्कतों से लाभान्वित हो सकती है। कुरआन की तिलावत और इसको याद करना सौभाग्य की बात है मगर इसको अपने जीवन में बरतने और इसकी शिक्षाओं के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने से ही इस का हक़ अदा हो सकता है। आप लोगों (क्षात्रों) ने अपने सीने में कुरआन की दौलत को सुरक्षित किया है इसके लिये आप लोग, आप के अध्यापक और आप के मां बाप बधाई के पात्र हैं।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सविच मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने अपने संबोधन में कहा कि कुरआन एक महान किताब है इसको पढ़ना और इसको दूसरों तक पहुंचाना हमारी ज़िम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि इस प्रोग्राम के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत की क़्यादत मुबारकबाद की पात्र है।

शाह वलीउल्लाह इन्स्टीटियूट के अध्यक्ष मौलाना अताउर्रहमान कासिमी ने कहा कि मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द, शिक्षा, कल्याणकारी कार्य और नौजवानों के प्रशिक्षण के लिये सराहनीय सेवाएं अंजाम दे रही है। उन्होंने इस प्रोग्राम के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को मुबारकबाद पेश की।

जमाअत इस्लामी हिन्द के उपाध्यक्ष सैयद अमीनुल हसन ने इस प्रतियोगिता के आयोजन पर बध ााई दी और इस में भाग लेने वालों को इस्लाम का प्रतिनिधि क़रार दिया। उन्होंने कहा कि हमें इसकी शिक्षाओं को साधारण करना है और पवित्र कुरआन के सन्देश को पूरी मानवता के सामने पेश करना है।

अंजुमन मिन्हाजे रसूल के अध्यक्ष सैयद अतहर हुसैन देहलवी

ने संबोधित करते हुए कहा कि जो क्षात्र यहाँ पधारे हैं उनको यह बताना मक़सद है कि इस किताब के पढ़ने, सीखने और समझने से वह अल्लाह के पुरस्कार के ज़रूर पात्र क़रार पायेंगे। उन्होंने इस प्रोग्राम के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पदधारियों को बधाई दी और कहा कि करोना काल में भी प्रतियोगिता का आयोजन करके जमीअत ने शानदार काम किया है।

ओलमा कोन्सिल उत्तराखण्ड के अध्यक्ष मौलाना जाहिद रिज़ा रिजवी ने कहा पवित्र कुरआन दुनिया की सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली किताब है लेकिन आज हमारा इससे संबन्धा कम या टूट सा गया है। उन्होंने इस शानदार प्रोग्राम के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जिम्मेदारान क्षात्र, और अधयापकों को दिल की गहराइयों से बधई दी। उन्होंने कहा कि इस प्रतियोगिता में जिस फराखदिली का सुबूत दिया जाता है वह जमीअत का बड़ा कारनामा है अर्थात हर मसलक के क्षात्रों को शिर्कत का अवसर दिया जाता है।

तालीमे जदीद फाउन्डेशन नई दिल्ली के चियरमैन मुफ्ती अफरोज़ आलम कासिमी ने अपने उदगार में सबसे पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की क़्यादत को बधाई दी और कहा कि कुरआन हमारे लिये मार्गदर्शक है। कुरआन की विशेषता यह है कि वह सबके लिये मार्गदर्शक है यह प्रतियोगिता पवित्र कुरआन से रूचि पैदा करने का माध्यम है।

हकम हज़रात की तरफ से प्रतिनिधुत्व करते हुए मदर्सा अर्बिया शमसुल उलूम के अध्यापक कारी हुजैफा कासिमी ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को हकम बनाने पर उनका शुक्रिया अदा किया। प्रोग्राम में अच्छे प्रबन्धा और हर मसलक के लोगों को शिर्कत का मौक़ा देने पर मर्कज़ी जमीअत की सराहना की।

सऊदी अरब दूतावास के धार्मिक मामलों के पदधारी सम्माननीय बदर बिन नासिर अल अंजी ने प्रतियोगिता के अंतिम प्रोग्राम में शिर्कत को अपने लिये सौभाग्य क़रार दिया और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को इस प्रतियोगिता के आयोजन पर और इस्लाम व मुसलमानों की सेवा और देश में सहीह अक़ीदा के प्रचार पर शुक्रिया अदा किया और कहा कि पवित्र कुरआन को अवतरित करने का सबसे बड़ा मक़सद एक अल्लाह की इबादत भी है। यह अल्लाह का बड़ा उपकार है कि उसने पवित्र कुरआन को हमेशा के लिये सुरक्षित कर दिया।

उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि अल्लाह तआला ने सऊदी अरब को जहाँ मुसलमानों की विभिन्न सेवाओं, हरमैन शरीफैन (मक्का-मदीना) की हिफाज़त और हाजियों की सेवा का सौभाग्य प्रदान किया वहीं कुरआन व हदीस की हर एतबार से सेवा का सौभाग्य भी प्रदान किया है। दुनिया की तमाम प्रचलित भाषाओं में पवित्र कुरआन के अनुवाद का प्रकाशन सऊदी अरब का अविस्मरणीय कीर्तिमान और कारनामा है। इससे वहां के शासकों के कुरआन से अति लगाव का पता चलता है।

प्रतियोगिता की पांचों श्रेणियों में प्रथम पोजीशन लाने वाले क्षात्रों ने अपनी बेहतरीन आवाज़ में कुरआन

की क़िरत का नमूना भी पेश किया जिससे श्रोतागण काफी प्रभावित हुए।

इसके अलावा मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के मुफ्ती मौलाना जमील अहमद मदनी, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के सलाहकार समिति के सदस्य डा० हाफिज अब्दुल अजीज मदनी, जमीअत अहले हदीस दिल्ली प्रदेश के अमीर मौलाना अब्दुस्सत्तार सलफी, जमीअत अहले हदीस झारखण्ड के सचिव और पूर्व विधायक मौलाना अक़ील अखतर मक्की, मौलाना मुहम्मद कासिम रहीमी, मौलाना अब्दुल अहद मदनी, मौलाना जलालुददीन फैजी, जनाब मुहसिन खान, मौलाना मनजर अहसन सलफी और मौलाना महमूद आलम फैजी आदि ने अपने उदगार पेश किये और सफल प्रोग्राम के आयोजन पर बधाई दी। प्रोग्राम में भाग लेने वाले अन्य लोगों में मौलाना अजीज़ अहमद मदनी और मौलाना शकील मेरठी के नाम उल्लेखनीय हैं।

अंतिम सत्र की शुरूआत कारी अब्दुन्नूर साहब की तिलावत से हुई। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के उप महा सचिव मौलाना रियाज़ अहमद मदनी ने प्रोग्राम का संचालन और जमीअत का परिचय पेश किया।

प्रतियोगिता में पोजीशन लाने वाले क्षात्रों को नक़द, घड़ी, किताब, और प्रशस्ति पत्र दिया गया। इस प्रतियोगिता में पूरे देश से तीन सौ क्षात्रों ने प्रतिभाग लिया जिन को प्रशस्ति पत्र, घड़ी और किताबें दी गईं।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष हाजी वकील परवेज साहब ने तमाम क्षात्रों और मेहमानों का शुक्रिया अदा किया। प्रेस रिलीज़ का सारांश। (अधिकृत जानकारी के लिये जरीदा तजुर्मान १६-३१ अगस्त २०२२ के अंक का अध्ययन लाभकारी होगा।

बाक़ी पृष्ठ १४ का

सम्बन्ध में असत्य बातें करते थे, और उसकी आयतों के मुक़ाबले में अकड़ते थे। (सूरा-६, अल अनआम, आयत-९३)

एक सही हदीस में आता है:"जब मनुष्य को क़ब्र में दफ़न किया दिया जाता है और उसके लोग वहां से चले जाते हैं तो वह उनके जूतों की आवाज़ सुनता है। इतने में दो फ़रिश्ते आते हैं और उसको उठाकर बैठाते हैं और उससे प्रश्न करते हैं कि तुम इस व्यक्ति के विषय में क्या कहते थे? आर्थात मुहम्मद के विषय में ।

तो ईमान वाला कहता है, मैं गवाही देता हूं कि वे अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। तो फिर उससे कहा जाता है, तुम जहन्नम में अपना ठिकाना देखते लेकिन अल्लाह ने बदलकर तुम्हारा ठिकाना जन्नत में कर दिया, तो वह जन्नत और जहन्नम दोनों में अपना ठिकाना देखता है। और जब मुनाफिक और विधर्मी से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय में पूछा जाता है तो वह कहता है, मुझे नहीं मालूम लोग ऐसा कहते थे। तो उसे लोहे के हथौड़े से पीटा जाता है जिसकी चीख़ को मनुष्य और जिन्नों के अतिरिक्त सब सुनते हैं। (बुख़ारी १३७४)

क्योंकि मनुष्य और जिन्न उसकी आवाज़ सुन लें तो संसार में जीवन बिताना कठिन हो जाए। इसलिए अल्लाह ने उनके सुनने को निषिद्ध कर दिया और क़ब्र के अज़ाब को ईमान बिल ग़ैब में सम्मिलित कर दिया है।

वक़्त बहुमूल्य है

मौलाना सईदुर्रहमान सनाबिली

वक़्त अल्लाह तआला की तरफ से प्रदत्त एक महान नेमत है जिसके बारे में क़्यामत के दिन हिसाब लिया जाए जाए गा। हिसाब लेने का मतलब यह है कि इन्सान ने अपनी उम्र को कहाँ और किन कामों में खपाया और खर्च किया। वक़्त की अहमियत का अन्दाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि अल्लाह ने कुरआन में विभिन्न सूरतों में वक़्त की क़सम खा करके इन्सान को वक़्त की अहमियत का एहसास दिलाया है और वक़्त के सहीह स्तेमाल के लिये उभारा है। अगर कोई अपने वक़्त का सहीह स्तेमाल करता है तो कामयब है और जो अपने वक़्त को यूं ही बर्बाद करता है वह घाटा उठाने वालों में से है। एक अवसर पर अल्लाह के रसूल पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''क्यामत के दिन किसी बन्दे के पांव उस वक़्त तक आगे नहीं बढ़ सकेंगे जब तक उससे उसकी आयु के बारे में सवाल न कर लिया जाए कि अपनी आयु को कहां लगाया, ज्ञान के बारे में कि उसने ज्ञान के अनुसार कितना अमल किया। माल के बारे में कि कहाँ से कमाया और कहां खर्च किया और शरीर के बारे में कि उसने अपने शरीर का स्तेमाल कहाँ किया। (सुनन तिर्मिज़ी २६१७, शैख अलबानी ने इस हदीस को सहीह कहा है)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति को नसीहत करते हुए फरमायाः

''पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले गनीमत (महत्वपूर्ण और कीमती) समझो। अपनी जवानी को बुढ़ापे से पहले, तन्दुरूस्ती को बीमारी से पहले, मालदारी को मोहताजी से पहले, खाली वक़्त को व्यस्तता से पहले और जिन्दगी को मौत से पहले, (मुस्तदरक हाकिम ७८४६, बैहकी १०२४८, शैख अलबानी रह० ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है)

वक़्त अल्लाह की दी हुई पूंजी है जिसके बारे में क्यामत के दिन सवाल जवाब होगा। अगर हम ने अपने वक़्त को अल्लाह की इबादत और नेक कामों में लगाया होगा तो हम सफल होंगे और हमने अल्लाह की इस नेमत को व्यर्थ कामों में लगाया होगा तो क्यामत के दिन पछतावे के एलावा कुछ नहीं हाथ आएगा। इसी तरह अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ताकतवर मुसलमान (ताकतवर का अर्थ यह है कि

जिसका ईमान मजबूत हो, अल्लाह पर भरोसा रखता हो) अल्लाह के नजदीक बेहतर और अल्लाह तआला को ज़्यादा पसन्द है, कमजोर मुसमलान से पहल करो उन कामों में जो तुम्हारे लिये लाभकारी हैं (अर्थात आखिरत में काम देंगे) और मदद मांग अल्लाह से और हिम्मत मत हार और तुझ पर कोई मुसीबत आए तो इस तरह न कहो कि अगर मैं ऐसा करता तो यह मुसीबत क्यों आती बल्कि इस तरह कहो कि अल्लाह की तरफ से लिखी गई तक़दीर में ऐसा ही था जो उसने चाहा किया। अगर मगर करना शैतान के लिये राह खोलना है। (सहीह मुस्लिम २६६४)

यह हदीस हम को शिक्षा देती है कि हम हर प्रकार के बेकार और फालतू कामों से बचें और कोई ऐसा काम न करें जिससे हमारा वक़्त बर्बाद होता हो, हमारे मान सम्मान को खतरा हो और जिस का कोई फायदा न हो।

जाने अनजाने में हर इन्सान से गलती होती है लेकिन पाप और गलती होने के बाद गलती का एहसास न करना ऐब की बात है। हम लोग सोशल मीडिया पर देखते हैं कि अश्लील वीडियो बनाने वाले खुल्लम खुल्ला पाप करते हैं और उनको अपने इस पाप का एहसास नहीं होता।

खुल्लम खुल्ला पाप कितना बुरा है इसका अन्दाज़ा अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से बयान इस हदीस से लगा सकते है जिस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

‘‘मेरी तमाम उम्मत को मआफ कर दिया जाए गा सिवाए उन लोगों के जो खुल्लम खुल्ला पाप करते हैं और पाप को खुल्लाम खुल्ला करने में यह भी शामिल है कि एक शख्स रात को कोई पाप करे जबकि अल्लाह ने उसके पाप को छिपाये रखा मगर सुबह होने पर वह पाप करने वाला लोगों से कहने लगे कि मैंने रात में ऐसा ऐसा पाप किया था। रात गुज़र गई थी और उसके रब ने उसका पाप छुपाये रखा लेकिन जब सुबह हुई तो पाप करने वाले ने स्वयं ही अपने पाप को खोल खोल कर बयान कर दिया’’ (सहीह बुखारी ६-६, सहीह मुस्लिम २६६०)

इस हदीस से मालूम हुआ कि सोशल मीडिया पर अश्लील वीडियो बना कर वायरल और फैलाने वाले चूंकि खुल्लम खुल्ला पाप करते हैं इस वजह से अल्लाह ऐसे लोगों को हर्गिज मआफ नहीं करेगा।

इन सब कामों में वक़्त की बर्बादी के साथ पाप भी होता है इसलिये सब से हमारी अपील है कि इस तरह के कामों से स्वयं को दूर रखें और कानून के दायरे में रहते हुए अपने समाज से इस घातक रोग के उन्मूलन का प्रयास भी करें क्योंकि कि हमारी नई पीढ़ी नैतिक एतबार से खतरे में पड़ती जा रही है। हम तमाम लोगों पर नैतिक और मानवीय कर्तव्य है कि हम व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर इस अश्लीलता से मानवता को बचाने के लिये व्यवहारिक कदम उठायें।